परिवार के कार्य | परिवार का महत्व

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। मानव ने अनेकानेक अविष्कार किए हैं किंतु आज तक वह ऐसी कोई भी व्यवस्था नहीं कर पाया है, जिससे कि परिवार का स्थान ले सके। इसका मूल कारण है कि परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्य अन्य संघ एवं संस्थाएं करने में असमर्थ हैं। हम यहां परिवार के कार्य का संक्षेप में उल्लेख करें करेंगे। परिवार के इन विभिन्न कार्यों से परिवार का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

1. प्राणीशास्त्रीय कार्य— परिवार के प्राणीशास्त्रीय कार्य इस प्रकार से हैं__

1. **यौन इच्छाओं की पूर्ति**— मानव की आधारभूत आवश्यकताओं में यौन संतुष्टि भी महत्वपूर्ण है। परिवार युवा समूह है जहां मानव समाज द्वारा स्वीकृत विधि से व्यक्ति अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति करता है। कोई भी समाज यौन संबंध स्थापित करने की नियमित एवं स्वतंत्रता नहीं दे सकता क्योंकि यौन संबंधों के परिणाम स्वरूप संतानोत्पत्ति होती है, नातेदारी व्यवस्था जन्म लेती है। पदाधिकारी एवं उत्तराधिकारी तथा वंशनाम व्यवस्थाएं भी इससे जुड़ी रहती है।
2. **संतानोत्पत्ति**— यौन संतुष्टि एक क्रिया के रूप में ही समाप्त नहीं होती, इसका परिणाम संतानोत्पत्ति के रूप में भी होता है। मानव समाज की निरंतरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि मृत्यु को प्राप्त करने वाले सदस्यों का स्थान नवीन सदस्यों द्वारा भरा जाए। परिवार ही समाज के इस महत्वपूर्ण कार्य को निभाता है। परिवार के बाहर भी संतानोत्पत्ति हो सकती हैं, किंतु कोई भी समाज अवैध संतानों को स्वीकार नहीं करता। वेद संतानों को ही पदाधिकार एवं उत्तराधिकार प्राप्त होते हैं।
3. **प्रजाति की निरंतरता**— परिवार ने ही मानव जाति को अमर बनाया है, यही मृत्यु और अमृत्यु का संगम स्थल है। नई पीढ़ी को जन्म लेकर परिवार ने मानव की स्थिरता एवं निरन्तरता को बनाए रखा है। गुडे लिखते हैं कि "परिवार मानव की प्राणीशास्त्री आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त व्यवस्था ना करें तो समाज समाप्त हो जाएगा।"

2. शारीरिक कार्य— परिवार के सारे कार्य इस प्रकार से हैं__

1. **शारीरिक शिक्षा—** परिवार अपने सदस्यों को शारीरिक संरक्षण प्रदान करता है। वृद्धावस्था, बीमारी, दुर्घटना, असहाय, अवस्था, अपाहिज होने आदि की अवस्था में परिवार ही अपने सदस्यों की सेवा करता है।
2. **बच्चों का पालन पोषण—** इस समय में बच्चों का लालन-पालन परिवार द्वारा ही किया जाता है। वर्तमान समय में शिशु के लालन-पालन के लिए अनेक संगठनों का निर्माण किया गया है, किंतु जो भावात्मक पर्यावरण बच्चों के विकास के लिए आवश्यक है वह केवल परिवार ही प्रदान कर सकता है।
3. **भोजन का प्रबंध—** परिवार अपने सदस्यों के शारीरिक अस्तित्व के लिए भोजन की व्यवस्था करता है। आदिकाल से ही अपने सदस्यों के लिए भोजन जुटाना परिवार का प्रमुख कार्य रहा है।
4. **निवास एवं वस्त्र की व्यवस्था—** परिवार अपने सदस्यों के लिए निवास की व्यवस्था भी करता है। घर ही वह स्थान है, जहां जाकर मानव को पूर्ण शांति प्राप्त होती है। सर्दी, गर्मी एवं वर्षा से रक्षा के लिए परिवार ही अपने सदस्यों को वस्त्र एवं स्थान प्रदान करता है।

3. आर्थिक कार्य— परिवार द्वारा किए जाने वाले आर्थिक कार्य किस प्रकार से हैं__

1. **उत्तराधिकार का निर्धारण—** प्रत्येक समाज में संपत्ति एवं पदों को पुरानी पीढ़ी द्वारा नई पीढ़ी को देने की व्यवस्था पाई जाती है। पितृसत्तात्मक परिवार में उत्तराधिकार पित्ताशय पुत्र को प्राप्त होता है, जबकि मातृसत्तात्मक परिवार में माता से पुत्री या मामा से भांजे को।
2. **उत्पादक इकाई—** परिवार उपभोग एवं उत्पादन की इकाई है। आदि काल से समाजों में तो अधिकांश उत्पादन का कार्य परिवार के द्वारा ही किया जाता है। मानव समाज की आदिम अवस्थाओं में जैसे शिकार, पशुपालन एवं कृषि अवस्थाओं में परिवार द्वारा ही संपूर्ण उत्पादन का कार्य किया जाता था।
3. **श्रम विभाजन—** परिवार में श्रम विभाजन का सबसे सरल रूप रेखा देखा जा सकता है जहां स्त्री, पुरुष एवं बच्चों के बीच कार्य का विभाजन होता है। परिवार में कार्य विभाजन का आधार यौन एवं आयु दोनों है। स्त्रियां घर का कार्य करती है तो पुरुष बाहर का कार्य करते हैं तथा बच्चे छोटे-मोटे कार्य करते हैं।
4. **संपत्ति का प्रबंध—** इस अर्थव्यवस्था के द्वारा ही वह आए प्राप्त करता है। परिवार की गरीबी एवं समृद्धि का पता आय से यह ज्ञात होता है। अपनी आय को परिवार कैसे खर्च करेगा, यह भी परिवार का मुखिया तय करता है। प्रत्येक परिवार के पास जमीन, जेवर, सोना, चांदी, औजार, पशु, दुकान आदि के रूप में चल और अचल संपत्ति होती है जिसकी देखरेख वही करता है।

4. धार्मिक कार्य— प्रत्येक परिवार किसी ना किसी धर्म का अनुयाई होता है। सदस्यों को धार्मिक, शिक्षा, धार्मिक, प्रथाएं, ता, त्योहार आदि का ज्ञान भी परिवार ही कराता है।

परिवार के कार्य | परिवार का महत्व

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। मानव ने अनेकानेक अविष्कार किए हैं किंतु आज तक वह ऐसी कोई भी व्यवस्था नहीं कर पाया है, जिससे कि परिवार का स्थान ले सके। इसका मूल कारण है कि परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्य अन्य संघ एवं संस्थाएं करने में असमर्थ हैं। हम यहां परिवार के कार्य का संक्षेप में उल्लेख करें करेंगे। परिवार के इन विभिन्न कार्यों से परिवार का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

1. प्राणिशास्त्रीय कार्य— परिवार के प्राणिशास्त्रीय कार्य इस प्रकार से हैं_

1. **यौन इच्छाओं की पूर्ति**— मानव की आधारभूत आवश्यकताओं में यौन संतुष्टि भी महत्वपूर्ण है। परिवार वह समूह है जहां मानव समाज द्वारा स्वीकृत विधि से व्यक्ति अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति करता है। कोई भी समाज यौन संबंध स्थापित करने की नियमित एवं स्थायी मान्यता नहीं दे सकता क्योंकि यौन संबंधों के परिणाम स्वरूप संतानोत्पत्ति होती है, नातेदारी व्यवस्था जन्म लेती है। पदाधिकारी एवं उत्तराधिकारी तथा वंशनाम व्यवस्थाएं भी इससे जुड़ी रहती हैं।
2. **संतानोत्पत्ति**— यौन संतुष्टि एक क्रिया के रूप में ही समाप्त नहीं होती, इसका परिणाम संतानोत्पत्ति के रूप में भी होता है। मानव समाज की निरंतरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि मृत्यु को प्राप्त करने वाले सदस्यों का स्थान नवीन सदस्यों द्वारा भरा जाए। परिवार ही समाज के इस महत्वपूर्ण कार्य को निभाता है। परिवार के बाहर भी संतानोत्पत्ति हो सकती है, किंतु कोई भी समाज अवैध संतानों को स्वीकार नहीं करता। वैध संतानों को ही पदाधिकार एवं उत्तराधिकार प्राप्त होते हैं।
3. **प्रजाति की निरंतरता**— परिवार ने ही मानव जाति को अमर बनाया है, यही मृत्यु और अमृत्यु का संगम स्थल है। नई पीढ़ी को जन्म देकर परिवार ने मानव की स्थिरता एवं निरन्तरता को बनाए रखा है। मुडे लिखते हैं कि "परिवार मानव की प्राणिशास्त्री आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त व्यवस्था ना करे तो समाज समाप्त हो जाएगा।"

2. शारीरिक कार्य— परिवार के शारीरिक कार्य इस प्रकार से हैं_

1. **शारीरिक शिक्षा**— परिवार अपने सदस्यों को शारीरिक संरक्षण प्रदान करता है। वृद्धावस्था, बीमारी, दुर्घटना, असहाय, अवस्था, अपाहिज होने आदि की अवस्था में परिवार ही अपने सदस्यों की सेवा करता है।
2. **बच्चों का पालन पोषण**— इस समय में बच्चों का लालन-पालन परिवार द्वारा ही किया जाता है। वर्तमान समय में शिशु के लालन–पालन के लिए अनेक संस्थाओं का निर्माण किया गया है, किंतु जो भावात्मक पर्यावरण बच्चों के विकास के लिए आवश्यक है वह केवल परिवार ही प्रदान कर सकता है।
3. **भोजन का प्रबंध**— परिवार अपने सदस्यों के शारीरिक अस्तित्व के लिए भोजन की व्यवस्था करता है। आदिकाल से ही अपने सदस्यों के लिए भोजन जुटाना परिवार का प्रमुख कार्य रहा है।
4. **निवास एवं वस्त्र की व्यवस्था**— परिवार अपने सदस्यों के लिए निवास की व्यवस्था भी करता है। घर ही वह स्थान है, जहां जाकर मानव को पूर्ण शांति प्राप्त होती है। सर्दी, गर्मी एवं वर्षा से रक्षा के लिए परिवार ही अपने सदस्यों को वस्त्र एवं स्थान प्रदान करता है।

3. आर्थिक कार्य— परिवार द्वारा किए जाने वाले आर्थिक कार्य किस प्रकार से हैं_

1. **उत्तराधिकार का निर्धारण**— प्रत्येक समाज में संपत्ति एवं पदों को पुरानी पीढ़ी द्वारा नई पीढ़ी को देने की व्यवस्था पाई जाती है। पितृसत्तात्मक परिवार में उत्तराधिकार पिताश्रय पुत्र को प्राप्त होता है, जबकि मातृसत्तात्मक परिवार में माता से पुत्री या मामा से भांजे को।
2. **उत्पादक इकाई**— परिवार उपभोग एवं उत्पादन की इकाई है। आदि काल से समाजों में तो अधिकांश उत्पादन का कार्य परिवार के द्वारा ही किया जाता है। मानव समाज की आदिम अवस्थाओं में जैसे शिकार, पशुपालन एवं कृषि अवस्थाओं में परिवार द्वारा ही संपूर्ण उत्पादन का कार्य किया जाता था।
3. **श्रम विभाजन**— परिवार में श्रम विभाजन का सबसे सरल रूप देखा जा सकता है जहां स्त्री, पुरुष एवं बच्चों के बीच कार्य का विभाजन होता है। परिवार में कार्य विभाजन का आधार यौन एवं आयु दोनों है। स्त्रियां घर का कार्य करती है तो पुरुष बाहर का कार्य करते हैं तथा बच्चे छोटे-मोटे कार्य करते हैं।
4. **संपत्ति का प्रबंध**— इस अर्थव्यवस्था के द्वारा ही वह आय प्राप्त करता है। परिवार की गरीबी एवं समृद्धि का पता आय से यह ज्ञात होता है। अपनी आय को परिवार कैसे खर्च करेगा, यह भी परिवार का मुखिया तय करता है। प्रत्येक परिवार के पास जमीन, जेवर, सोना, चांदी, औजार, पशु, दुकान आदि के रूप में चल और अचल संपत्ति होती है जिसकी देखरेख वही करता है।

4. धार्मिक कार्य— प्रत्येक परिवार किसी ना किसी धर्म का अनुयाई होता है। सदस्यों को धार्मिक, शिक्षा, धार्मिक, प्रथाएं, नैतिकता, त्योहार आदि का ज्ञान भी परिवार ही कराता है। ईश्वर पूजा एवं आराधना, पूर्वज, पूजा अधिकारियों को एक व्यक्ति परिवार के अन्य सदस्यों से ही सीखता है। पाप-पुण्य स्वर्ग-नरक हिंसा-अहिंसा की धारणा भी व्यक्ति परिवार से ही सीखता है।

5. राजनीतिक कार्य— परिवार राजनीतिक कार्य भी करता है। आदिम समाज से जहां प्रशासक का मुखिया परिवारों के मुखिया से सलाह लेकर कार्य करता है वहां परिवार द्वारा महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका निभाई जाती है। भारत में संयुक्त परिवार के झगड़ों को निपटाने व न्याय व्यवस्था करने वाला जज होता है। वही ग्राम पंचायत एवं जाति पंचायत में अपने परिवार का प्रतिनिधित्व करता है।